Existing Cities) तथा नवीन नगरों का नियोजन। मूल बात यह है कि नगर की कार्यकारी क्षमता में वृद्धि की जाय अर्थात् भौतिक तथा संस्थागत संसाधनों के लिये ऐसी व्यवस्था प्रदान की जाये जो कि आवश्यकताओं के अनुरूप हो। नगर की आर्थिक, सामाजिक तथा भौतिक परिस्थितियों के बारे में सही-सही जानकारी प्राप्त की जाये ताकि इस ज्ञान के द्वारा नगरीय समुदाय का भविष्य अधिक उज्जवल बनाया जा सके।

नगर-नियोजन की परिभाषा करते हुए स्टुअर्ट चैपिन ने कहा कि यह लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप नगरीय पर्यावरण को विकसित एवं समायोजित करने की प्रक्रिया है। आगे चैपिन ने कहा कि नगर के विकास के लिये तकनीकी ज्ञान तथा विवेकपूर्ण दूरदर्शिता (Intelligent Foresight) का होना आवश्यक है। इस प्रकार नगर नियोजन समायोजन के तरीके के रूप में जिसे नागरिकों के तीव्र गति से परिवर्तित होने वाली सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप किया गया है।

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषा से यह स्पष्ट है कि नगर नियोजन की अवधारणा एक एकीकृत स्वरूपयुक्त है न कि मात्र भौतिक अथवा तकनीकी। नगर नियोजन में एक क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों के जीवन-प्रतिमान के आर्थिक एवम् सामाजिक आयामों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

व्यापक नगर-नियोजन का तात्पर्य मात्र यह नहीं है कि पर्याप्त खर्च पर तथा ऋण लेकर एक नगर के पूर्व निर्माणकार्य को गिराकर उस पर पुननिर्माण किया जाय तथा नगर-नियोजन का मात्र यह तात्पर्य भी नहीं है कि नगर को सतही रूप से सुन्दर बनाया जाये। नगर नियोजन का वास्तविक लक्ष्य एवं उद्देश्य नागरिकों को वे सुविधाएँ प्रदान करना है जो कि आम व्यक्ति के कल्याण में सहायक हों तथा उसमें वृद्धि करती हों। इस प्रकार नगर-नियोजन का कार्य सम्पूर्ण नगर को सुविधा उपलब्ध करने में निहित हैं जिसका मुख्य तात्पर्य उन कार्यों को करना है जो कि जन-जीवन को आगे बढ़ा सकें।

यहाँ पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि अतीत में नगर-नियोजन में भौतिक व्यवस्थाओं को ही दृष्टिगत रखा जाता था जबकि नवीन नियोजन भौतिक व्यवस्थाओं के साथ-साथ अनेक प्रकार के सामाजिक तथा सांस्कृतिक समायोजनों को भी सम्मिलित करता है। साथ ही यह पूर्व के नियोजन की भाँति औद्योगिक विकास, नगरपालिका न्याय (Municipal Justice), नगरपालिका आवास (Municipal Housing) रहने तथा कार्य की दशाएँ, नागरिकों का स्वास्थ्य, पूर्ण शैक्षणिक अवसर इत्यादि भी निश्चित करता है।

नियोजन का आशय यह भी है कि प्रकृति की स्वाभाविकता को बनाये रखना जाये। अनेक प्रतिक्रियावादी (Reactionary) नियोजन का विरोध भी करते हैं तथा वे यह तर्क देते हैं कि यदि इसे एक बार प्रारंभ किया गया तो यह कभी न रूकने वाली प्रक्रिया बन जायेगी।

एक नगर का नियोजन सामूहिक प्रयत्न निहित करता है तथा इसकी दो विशेषताएँ हैं:-

(1) आत्म-जागरुकता (Self Consciousness) अर्थात् जानबूझकर किया जाने वाला कार्य, अर्थात् एक प्राप्त किये जा सकने योग्य लक्ष्य का जानबूझ कर चयन।

Scanned with CamScanner

Absolutism) में राजाओं ने नगर में अपने निवास को ही न्यायिक केन्द्र के रूप में बनाया। ग्रीक निवासी अपनी सार्वजनिक प्रतिष्ठानों (इमारतों) पर अत्यधिक गर्व करते थे। रोमन साम्राज्य के विस्तार के साथ ही नगर-नियोजन के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई जिसके अन्तर्गत सड़कों की चौड़ाई में वृद्धि तथा सुन्दर इमारतों का निर्माण किया गया। मध्यकाल में चारदीवारी के भीतर नगर अस्तित्व में आये। इस प्रकार मध्ययुगीन नगर रहने तथा सुरक्षा की दृष्टि से पर्याप्त उत्तम उदाहरण के रूप में हैं। जब तोपखाने का आविष्कार हुआ तो चारदीवारी का महत्त्व लगभग समाप्त हो गया तथा नगर का विस्तार चारदीवारी के बाहर होने लगा।

इस प्रकार यद्यपि वैज्ञानिक आधार पर व्यवस्थित नियोजन एक आसन्न अवधारणा है, लेकिन जब से प्रथम नगर का निर्माण हुआ है, तब से नगर-नियोजन भी विद्यमान रहा है। नेल्स एंडरसन के अनुसार नगर-नियोजन की योजना हजारों वर्ष पुरानी रही है लेकिन इस प्रक्रिया में वर्तमान में पर्याप्त परिवर्तन हो गया है, यद्यपि लक्ष्यों में परिवर्तन नहीं हुआ है। यहाँ तक कि पूर्व-ऐतिहासिक नगर में भी एक योजना का आभास कराते हैं। रोमन लोग अपने नगरों में सुन्दर सड़क-व्यवस्था, मनोरंजन की सुविधा, शौचालय, बाग-बगीचे आदि के सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

भारत में हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की ऐतिहासिक खुदाई के परिणामस्वरूप भवन निर्माण, नालियों की व्यवस्था तथा भौतिक निर्माण के अन्य आयामों के एक सुनियोजित प्रारूप का आभास होता है। संभवतया इस समय के नियोजन से संबंधित अभिलेख उपलब्ध नहीं रहे जिसके परिणामस्वरूप इस जानकारी से आने वाली पीढ़ी को वंचित होना पड़ा।

आधुनिक समय में फ्रांस में पेरिस प्रथम महानगर प्रतीत होता है जो आधुनिक अर्थों में एक नियोजित नगर कहा जा सकता है। लुइस 14 के दरबार में वास्तुकारों की अकादमी थी जो एक नगर के व्यवस्थित विकास हेतु डिजाइन तैयार करती थी। इसी प्रकार नेपोलियन तथा नेपोलियन तृतीय ने और भी अधिक उत्साह के साथ पेरिस को विश्व का एक सबसे अधिक सुन्दर नगर बनाने का प्रयास किया।

एक संगठित तथा व्यापक आंदोलन के रूप में नगर नियोजन जर्मनी में सर्वाधिक विकसित हुआ तथा यहाँ से विश्व के अन्य भागों की ओर इसका प्रसार हुआ।

अन्य यूरोपीय देश विशेष रूप से फ्रांस, इंग्लैण्ड, बैल्जियम तथा आस्ट्रेलिया ने नगर नियोजन के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति कर ली थी।

अमेरिका में नगर-नियोजन का विचार फ्रांस व इंग्लैण्ड से आया जबकि जोनिंग (Zoning) का विचार जर्मनी से लिया गया। आधुनिक समय में वैज्ञानिक अर्थ में नगर-नियोजन का एक सर्वोत्तम उदाहरण है- अमरीका का फिलाडेल्फिया नगर। भौतिक नियोजन में वांशिगटन डी.सी. विश्व में सर्वप्रथम नियोजित नगरों का प्रतिनिधित्व करता है। फिलाडेल्फिया के लिये विलियम्स पैन्स (William Penn's Plan) का प्लान 1782 में अस्तित्व में आया। ओगलेथोर्पे का प्लान 1733 (Oglethorpe's Plan) में सवन्ना नगर के लिये बनाया गया। इसी प्रकार एल. इन्फेंट ने 1790 में वाशिंगटन डी.सी. के लिये एक पर्याप्त आकर्षक प्लान बनाया।

Scanned with CamScanner

कार्य एवं रहन-सहन की दशाएँ, नागरिकों का स्वास्थ्यपूर्ण शैक्षणिक अवसर, श्रम के कम घंटों के साथ नवीन परिस्थितियों के अन्तर्गत अवकाश का समय एवं अवसरों की प्राप्ति।

जॉन सिल्क बकिंगघम ने 1849 में 'नेशनल स्टाइल्स एंड प्रैक्टिकल रेमेडीज' नामक पुस्तक प्रकाशित की थी जो नगरीय आदर्शों के अत्यधिक आमूल विकेन्द्रीकरण का प्रतिपादन करती है। उसके मस्तिष्क में एक केन्द्रीय नगर (Central City) की कल्पना थी जिसमें बस्तियाँ तथा सैटेलाइट टाउन्स (Satellite Towns) हों। उद्योग तथा उनसे संबंधित सब कार्य जो औद्योगिक प्रक्रिया के फलस्वरूप अस्तित्व में आये हैं, नगर के बाहरी क्षेत्र (Out Side) में स्थित हों ताकि आबादी वाले क्षेत्र (आवासीय क्षेत्र) का पर्यावरण प्रदूषित न हो। उसके अनुसार केन्द्रीय नगर लगभग एक वर्गमील में फैला हो तथा उसकी आबादी 10,000 से अधिक न हो। होवार्ड को गार्डन सिटी की अवधारणा के जनक के रूप में माना जाता है तथा उसके अनुसार गार्डन सिटी की भूमि पर व्यक्तियों का नहीं अपितु समुदाय का स्वामित्व हो।

होवार्ड (Howard) ने अपनी पुस्तक, 'ए पीसफुल पाथ टु रियल रिफार्म' (A peaceful Path to real Reform) में इस बात का उल्लेख किया है कि एक नगर की आदर्श जनसंख्या तीस हजार से अधिक नहीं होनी चाहिये। नगर के चारों ओर प्राकृतिक दीवार (Natural Wall) के रूप में एक हरियालीनुमा क्षेत्र (Green Belt) हो। नगर को अनावश्यक जनसंख्या वृद्धि से सुरक्षित रखा जाये। बाहरी जनसंख्या के नगर में प्रवेश पर रोक हेतु नगर के चारों ओर एक दीवार (Barrier) का निर्माण किया जाना चाहिये।

पारिस्थिकी (Ecology)

जैसा की ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, नियोजन के लिये नगरीय व्यवहार की जानकारी आवश्यक है। इस संदर्भ में पारिस्थिकी से संबंधित जानकारी महत्त्वपूर्ण है। भौतिक आयोजन के समय पारिस्थितिकी को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। कुल मिलाकर नियोजन का उद्देश्य संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग तथा सामुदायिक जीवन के युक्तिसंगत एकीकरण (Rational Intergration) से है, उद्योगों की स्थापना हेतु स्थान, जनसंख्या का वितरण एवं पृथक्करण (Sagregation), सामाजिक संस्थानों के प्रभाव के क्षेत्र, नगरीय जीवन के भौतिक, प्रौद्योगिकी, आर्थिक, राजनीतिक तथा सास्कृतिक पहलुओं के मध्य अन्तर-संबंध, आदि के बारे में पर्यावरणविद् (Ecologist) का ज्ञान महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार स्थानीय तथा क्षेत्रीय नियोजन में पारिस्थितिकीय ज्ञान का लाभ तर्कसंगत प्रतीत होता है।

नियोजन का क्षेत्र (Scope of the Area of Planning)

एक नियोजन परियोजना उतनी ही बड़ी होनी चाहिये जिसे कि सुचारू रूप से पूर्ण किया जा सके। परियोजना का आरंभ कैसे किया जाये, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। अक्सर यह देखने में आता है कि बड़े नगर निकटवर्ती छोटे नगरों की कीमत पर जल-संसाधन का अधिकाधिक उपयोग करते हैं।

Scanned with CamScanner

नियोजन के प्रकार

बर्जल ने अपनी कृति, 'अरबन सोश्यल स्ट्रक्टचर' में नियोजन के दो प्रकारों का उल्लेख किया है-

1. भौतिक नियोजन (Physical Planning)

2. सामाजिक नियोजन (Social Planning)

1. भौतिक नियोजन में स्थानीय प्रतिमान, भूमि का उपयोग, भवन, परिवहन मार्ग तथा नियोजन संबंधी अन्य भौतिक पहलुओं को सम्मिलित किया जाता है।

2. सामाजिक नियोजन के अन्तर्गत एक विशिष्ट क्षेत्र में रहने वाले सभी समूहों के मध्य सद्भाव स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। लोगों की सामाजिक आवश्यकताओं, सांस्कृतिक मूल्यों, जीवनशैली को किसी भी प्रकार प्रस्तावित योजना में पर्याप्त महत्ता प्रदान की जाती है तथा यह कार्य भौतिक पर्यावरण के साथ लोगों की मानसिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं में सामंजस्य स्थापित करते हुए किया जाता है।

Scanned with CamScanner

भौतिक नियोजन

कुल मिलाकर भौतिक नियोजन सदैव ही महत्त्वपूर्ण रहा है, जिसे 3 प्रमुख तत्त्वों में विभाजित किया जा सकता है –

1. क्षेत्र (Area) 2. संचार (Communication) तथा 3. सेवाएँ (Service)

नियोजन का क्षेत्र संरक्षण (Conservation) तथा पुनर्विकास को सम्मिलित करता हैं। संरक्षण का तात्पर्य उचित क्षेत्रों की सुरक्षा एवं रख-रखाव से है जबकि विकास का उद्देश्य निम्नस्तरीय एवं पतनोन्मुख (Deteriorated Areas) क्षेत्रों के पुनर्वास से है जैसे कच्ची बस्तियों से हटाकर उन्हें फिर से बसाना।

संचार-व्यवस्था में परिवहन, यातायात की समस्या, गली व्यवस्था आदि सम्मिलित होते हैं जबकि सेवाओं में समुदाय के लोग, बाग-बगीचों, खेल के मैदान, स्कूल, कूड़ा-कचरा हटाने की व्यवस्था निहित होती है।

नियोजन के उद्देश्य (Objective of Planning)

नगर नियोजन के दो प्रमुख उद्देश्य हैं-

1. सामान्य उद्देश्य (General Objectives) तथा
2. विशिष्ट उद्देश्य (Special Objective)

सामान्य उद्देश्यों में सम्पूर्ण नगर का पर्यावरण सम्मिलित होता है जिसमें भौतिक, सामाजिक, सौन्दर्य सम्बन्धी तथा धार्मिक पहलू आदि निहित होते हैं।

विशिष्ट उद्देश्यों के तहत, समस्याओं का समाधान आंशिक रूप में, जब भी वे उत्पन्न होती है, किया जाता है। कोल (Cole) के अनुसार नियोजन में नगरीय विकास का पूर्वानुमान तथा इस विकास की आवश्यकता की पूर्ति हेतु भविष्य में नियोजन हेतु स्थान की सुविधा उपलब्ध कराना है। नियोजन को तभी सफल कहा जायेगा जब वह नगर की उदारता में वृद्धि, लोगों की अर्थव्यवस्था एवं रहन-सहन में सुधार तथा नगरीय पर्यावरण में सुधार लाने में सक्षम हो।

Scanned with CamScanner

मास्टर प्लान
(Master Plan)

हाल के वर्षों में मास्टर-प्लान की अवधारणा पर्याप्त महत्ता प्राप्त कर चुकी है। मास्टर प्लान सम्पूर्ण नगर से संबंधित होता है। एक नगर का मास्टर-प्लान एक सामान्यीकृत विचार है जो इस बात की जानकारी देता है कि नगरीय समाज किस दिशा की ओर बढ़ रहा है। दुर्भाग्वयवश अधिकांश मास्टर-प्लान सम्पूर्ण रूप से भौतिक निर्माणकार्य से संबंधित होते हैं। मास्टर-प्लान सम्पूर्ण नगर के स्थान संबंधी प्रतिमान (Spatial Pattern) का एक व्यापक, सामान्य चित्रण प्रस्तुत करता है।

आमतौर पर मास्टर-प्लान, उद्योग, व्यापार तथा आवास जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों से संबंधित होता है। लेकिन हाल के वर्षों में यह एक स्कूल की स्थिति, पोस्ट-ऑफिस, खेल का मैदान आदि को भी महत्ता प्रदान करने लगा है। मास्टर-प्लान की उपयोगिता से संबंधित तीन औचित्य निम्नलिखित हैं -

(1) दैनिक जीवन की त्रुटियाँ जो कि एक लक्ष्य प्राप्त करने में व्यावधान उपस्थित करती हैं, उनसे मुक्ति पाने हेतु ही मास्टर-प्लान बनाया जाता है। यही मास्टर-प्लान का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रकार्य है। यदि एक सामुदायिक नियोजन कार्यक्रम नहीं है तो अतीत में की गई त्रुटियों की पुनरावृत्ति होती है।

(2) एक मास्टर-प्लान समुदाय को किसी परिवर्तन के परिणामों के अवलोकन का अवसर प्रदान करता है। उदाहरण के तौर पर नई ऊँची इमारत, यदि उसके डिजाइन में त्रुटि रह गई हो तो वह आस-पास की रोशनी में व्यावधान उत्पन्न कर सकती हे।

(3) एक मास्टर-प्लान सहायक तत्त्वों को लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्ता प्रदान करता है। साधन तथा साध्य के मध्य संबंध अधिक स्पष्ट होता है।

मास्टर प्लान के प्रमुख पहलू

क्विन ने अपनी पुस्तक 'अरबन सोशियोलॉजी' में मास्टर-प्लान के तीन पहलुओं का उल्लेख किया है। इन तीनों का नगर-नियोजन में एक प्रमुख ऐतिहासिक महत्त्व है-

1. भूमि-उपयोग प्रतिमान (Land use Pattern)
2. परिवहन तथा सुरक्षा (Transportation and Safety)
3. नगर का सौन्दर्यकरण (City Beautification)

Scanned with CamScanner